रिकॉर्ड :– मैं इक नन्हा सा बच्चा हूँ.... ॐ पिताश्री 20/6/64
ओम् शांति। बच्चे जानते हैं कि हम अब अंधियारे से रोशनी में जाते हैं। इनकी रोशनी भी ऐसे है, जैसे सूक्ष्मवतन सूर्य निकलता है, इसकी तपत हो जाती है। यह है ठंडी। अब यह है लाइट। तो इन आँखों के लिए है। आत्मा को भी आँखें हैं। आत्मा को बुद्धि की आँखें मिलती हैं। आत्मा जानती है, बरोबर हम अभी बेहद के बाप को भी जानते हैं और हम आँखों से ब्रह्मा रथ, जिसमें शिवबाबा प्रवेश करते हैं, उनको भी जानते हैं। तो बच्चों को पहचान हुई है। पहचान तब होती है जबकि सन्मुख मिला जाता है। नंदीगण, भागीरथ भी कहते हैं। नंदीगण हमेशा बैल को रखते हैं। भागीरथ फिर मनुष्य को दिखाते हैं। एक चित्र दिखाते हैं, समझते हैं, इनमें गंगा आई। अब पानी की गंगा तो है नहीं। यह अभी तुम जान गए हो। शास्त्रों में तो बहुत झूठी बातें हैं। इनको हिन्दू शास्त्र कहेंगे। अभी तुम ब्राह्मणों को सब शास्त्र का ज्ञान है। सब वेदों–ग्रंथों–उपनिषदों आदि का तुम सार समझते हो। कई बच्चियाँ हैं जो कब कोई शास्त्र पढ़ा अथवा सुना ही नहीं है; परन्तु सब वेदों–शास्त्रों के सार को समझ रहे हो। अनपढ़ और ही पढ़े हुए से तीखे जाते हैं। अनपढ़ आगे पढ़े ही भरी ढाएँगे, नहीं तो अनपढ़ पढ़े आगे भरी ढोते हैं– यहाँ यह वण्डर है न! कुछ नहीं पढ़े हुए, सब वेद–शास्त्रों, धर्मों, भक्तिमार्ग के कर्मकाण्डों को जानते हैं। वेद–शास्त्र–उपनिषद आदि पढ़ते हैं, वानप्रस्थ अवस्था में गुरु करते हैं, फिर वह बैठ शास्त्र आदि सुनाते हैं। वह समझते हैं, इनसे बाप के पास जाने का भिन्न–2 रास्ता मिलता है। समझते हैं, पहाड़ी है, कहाँ से भी ऊपर चढ़कर जाना है; परन्तु ऐसे तो है नहीं। तुम जो कुछ नहीं जानते थे, अब सब कुछ जान गए हो। कुमारियों द्वारा ही प०पि०प० भीष्मों आदि को ज्ञान बाण मरवाते हैं। दुनिया इन बातों को नहीं जानती। जगदम्बा सरस्वती कुमारी है न। सरस्वती सरनेम रखाते हैं। बड़े–2 पंडित 'सरस्वती' सरनेम रखाते हैं। वास्तव में मम्मा ज्ञान सागर से निकली हुई ज्ञान सरस्वती है। बरोबर अब कन्याओं में जास्ती ताकत आती है; क्योंकि वह उल्टी सीढ़ी नहीं चढ़ती हैं। पुरुष जब स्त्री को लेता है तो उसमें मोह चला जाता है, फिर मात–पिता, दादी आदि सबसे मोह निकल, स्त्री के मुरीद बन जाते हैं, फिर बच्चे पैदा करते हैं तो उनमें मोह चला जाता। अब तुम सबसे नष्टोमोहा बनते हो। अपन को आत्मा निश्चय करते हो। आत्मा का योग लगना है बाप से। योग अर्थात् याद। तुम्हारी बात ही निराली होती है न। कन्याएँ तो पवित्र होती हैं, वह तीर्थ आदि नहीं करतीं; क्योंकि कन्या तो है ही पवित्र। मनुष्य तीर्थों पर जाते हैं पाप कटने। समझते हैं, गंगा पतित–पावनी है। अच्छा, फिर अमरनाथ, बद्रीनाथ, रामेश्वर आदि पर जाते हैं, तो क्या वह सब पतित–पावन हैं? पतित–पावन तो एक होना चाहिए न। गंगा पतित–पावनी है तो फिर वहाँ क्यों जाते हैं? क्या देखने? कहते हैं, तीर मारा फिर गंगा निकली। कुछ न कुछ गऊमुख आदि बनाए रखते हैं। बाप बैठ समझाते हैं, कुमारियों को तीर्थ करने की दरकार नहीं। कन्याएँ पवित्र हैं। कन्याओं में मुख्य मम्मा है। उनकी माँ का फिर मेल का रूप (ब्रह्मा) है। इसको तुम भाकी पहनते हो तो कितना हाहाकार होता है; इसलिए भाकी के लिए जगदम्बा मिली हुई है। उनको माताएँ–कन्याएँ भाकी पहनना शोभता है। अगर फिर पुरुष उनकी गोद में जाएँ तो भी हाहाकार हो जाता है। यह न हो तो फिर कोई भी विघ्न न पड़े; परन्तु कल्प पहले जो होता है सो होता है। वास्तव में है सारा बुद्धि का काम। गोद अगर न लेवे तो कोई हर्जा नहीं है। बाप कहते हैं– बच्चे, तुम आत्मा हो, माम् एकम् याद करो। इसमें गोद की तो बात उठती नहीं; परन्तु लॉ फिर कहता है, जब तक शिवबाबा की गोद में, ब्रह्मा की गोद में न बैठे तो ब्राह्मण कैसे कहलावे? गुरु की गोद में देते हैं न। यहाँ तो बाप भी है, सद्गुरु भी है, तो इसकी गोद में जाना ही पड़े। मनुष्य समझते नहीं, तो उल्टा उठाए लेते हैं। सन्यासियों को गुरु करते हैं तो बहुत जाकर माथा टेकते हैं। चरण धोकर पीने

की तो आदत पड़ी हुई है। भक्तिमार्ग वालों ने यह सारा रोला मचाया है। कृष्ण के पैर मंदिरों में रखते हैं। अब शंकर हो तो भी उनके पैर लगा दिए हैं; क्योंकि वह भी है सूक्ष्मवतनवासी। समझाया जाता है उनका सूक्ष्म शरीर है। शिवबाबा को तो अपने पैर हैं नहीं। उनका शरीर तो है नहीं जो चरणों की धूल बने। बाबा कहते हैं, तुमको शिवबाबा के चरणों की धूल नहीं बनना है। मैं इन सब कलहयुगी रस्म–रिवाज़ से बच्चों को आय छुड़वाता हूँ। मेरे चरण हैं नहीं, मेरे को तुम क्या करेंगे! सन्यासी लोग तो शिवोहम् कह बैठ जाते हैं। इनका शरीर तो है। फिर उनपर जल आदि बैठ चढ़ाते हैं। शिव को शरीर हैं नहीं। यह है ब्रह्मा का तन। इसलिए तुम शिवबाबा की पूजा नहीं कर सकते। इस भाग्यशाली रथ में शिवबाबा आया है। यह ... सब भक्तिमार्ग ने शुरू किया है। उन शिवोहम् कहने वालों पर भी फूल आदि चढ़ाते हैं। यह है भक्तिमार्ग के रस्म–रिवाज़। कहते हैं, माताओं को लिंग की पूजा न करनी चाहिए। अर्थ तो समझते नहीं। शिव लिंग तो है नहीं, वह तो स्टार है न! अब उन्होंने शिव–शंकर को इकट्ठा रख दिया है। शंकर की पूजा तो कर सकते हैं। फिर मनुष्य का आकार है। वह है लिंग का शेप। तो शेप ऐसा होने से कुछ समझ नहीं सकते। स्त्री क्यों नहीं पूजा करे? शिव (मा)ना प०पि०प०, कल्याणकारी। इनकी तो पूजा वास्तव में बहुत करनी चाहिए। शिव कल्याणकारी एक ही है। पतित से पावन बनाना कहते हैं, शिवबाबा आकर पावन बनाओ। सबका कल्याण करते हैं। जो पहले नम्बर में ल०ना० थे, वही 84 जन्म ले पतित बने हैं। तो सब पतित हो गए। सतोप्रधान से सतो, रजो, तमो में सब आ गए हैं। सर्व का कल्याण करने वाला एक ही बाप ठहरा। मनुष्य पतित बने हैं। पहले आने से ही मनुष्य पतित नहीं होते हैं, पहले तो पावन होते हैं। यह बाप बैठ समझाते हैं– मेरे लाडले, सिकीलधे आत्मा एवं सालिग्रामों! सुनते हो, बाप इस मुख से क्या कह रहे हैं। और कोई तो कह न सके। कोई भी सन्यासी आदि कह न सके कि हम एवर पावन, इस पतित शरीर द्वारा तुम आत्माओं से बोल रहा हूँ। बाप ही कह सकते। बाबा के पास समाचार आते हैं, बाबा–2 कहकर फिर कोई न कोई बात पर भस्मासुर बन जाते हैं। माया थप्पड़ लगाए देती है, अपन को भस्म कर देते हैं। काम अग्नि है न। यह सारी दुनिया भस्मासुरों की है सिवाय तुम ब्राह्मणों के। परमात्मा को सर्वव्यापी कह अपन को श्रापित करते हैं, उनको भस्मासुर कहते हैं। बाप आए भस्मासुर पने से छुड़ाते हैं। समझाते हैं– मीठे–2 बच्चे, तुम तो मेरी संतान हो, तुम भी ब्रह्माण्ड में रहते हो। वहाँ तुम अशरीरी हो। कोई संकल्प–विकल्प नहीं चलता है। जब तक संकल्प उठे कि हम जावे तब तक वहाँ रहते हैं। फिर ड्रामा की आदि शुरू होती है। प्रालब्ध खड़ी है। इस समय के संस्कार तुम वहाँ नहीं ले जावेंगे। इस समय तुम त्रिकालदर्शी हो। यह संस्कार तो प्रायःलोप हो जाने हैं। यह ज्ञान वहाँ नहीं रहेगा। जब तक यहाँ हो तो ज्ञान है। यहाँ से बच्चे संस्कार ले जाते हैं, वह फिर इमर्ज होते हैं तो उस अनुसार इस शक्ति सेना में आकर दाखिल हो सकते हैं। (लड़ाई वालों का मिसाल) छोटे पने में तो पता नहीं पड़ता, बड़ा होते ही मिलेट्री में दाखिल हो जाते हैं। कोई को यहाँ जन्म लेना होगा तो संस्कार ले जाते हैं, तो अच्छे घर में जाए जन्म लेते हैं, फिर संस्कारों अनुसार छोटे बच्चे भी यहाँ आते हैं। फिर स्वर्ग में नया जन्म लेंगे तो संस्कार खत्म हो जावेंगे, फिर राजधानी के संस्कार आवेंगे। प्रालब्ध भोगने लिए यह संस्कार .... हो जाते हैं। बाबा देखते हैं, इनकी आत्मा कशिश करती है। कई बच्चों का बहुत लव रहता है, आत्मा देखकर खुश होते हैं; परन्तु ऑरगन्स छोटे होने कारण बोल नहीं सकते हैं। तो आत्मा संस्कारों सहित; परन्तु ऑरगन्स छोटे हैं; इसलिए बोल नहीं सकते, जितना बड़ा होगा उतने संस्कार खुलते जावेंगे। कितनी बातें बाप समझाते हैं। प०पि०परम+आत्मा कहो या परमात्मा कहो, फिर भी पिता है न। पिता से वर्सा ज़रूर मिलना चाहिए। पिता है स्वर्ग का रचता। इनको नर्क का रचता नहीं कहेंगे, वह है स्वर्ग का रचता। तुम बच्चे जानते हो, हम बाबा से वर्सा ले रहे हैं। कल्प पहले भी लिया था। इसी समय पर बेहद के बाप से बेहद सुख का वर्सा मिलता है– यह सिर्फ तुम ही कह सकते हो। यह हैं

बिल्कुल नई बातें। शास्त्रों में तो बहुत गड़बड़ है; इसलिए शास्त्रवादी सामना करते हैं। जब पहले समझें गीता का भगवान कृष्ण नहीं .... तब समझे गीता ही झूठी है। तो बाकी इनके बाल–बच्चे भी झूठे ठहरे। तुम सच्चे बाप के बच्चे सच बताते हो, मनुष्य सब झूठ बताते हैं। गीता ही मुख्य है। श्रीमत भगवत गीता है। गीता को वेद–उपनिषद नहीं कहेंगे, वह सब हैं गीता के बाल–बच्चे और सब झूठे हैं। शिव पुराण में भी पार्वती का नाम डाल दिया है तो सब मिक्सचर कर दिया है। गीता ही माई–बाप है। गीता से ही राजयोग का व स्वर्ग की राजाई का वर्सा मिलता है, बाकी बाल–बच्चों से वर्सा क्या मिलेगा! अल्प काल के लिए तो जनावरों को भी मिलता है। बिल्ली के पूँगरे होते हैं, उनको दूसरा कोई हाथ लगावे तो वह उनको उठावेगी नहीं। समझते हैं, कोई ने छू लिया है। बिल्ली में भी कितना अक्ल है। मनुष्य जनावरों से अक्ल उठाते हैं। मच्छर आदि भी किस्म–2 के होते हैं, उन्हों के रगो से कॉपी करते हैं। एरोप्लैन्स भी उनको देख बनाया है। यह सब ड्रामा में पहले से ही नूँध है। बाबा के होते–2 यह बिजली आदि कुछ भी नहीं थी, दुकानों में शमा जलाते थे। फिर गैस निकली। फिर बिजली निकली है। 100 वर्ष के अंदर निकले हैं। कितनी उन्नति हो रही है, सो भी पत्थरबुद्धियों की। तुम पारस बुद्धि बनते हो तो तुम्हारे महल आदि भी बहुत क्वीक बनेंगे। तुम्हारा है साइलेंस का घमंड, उन्हों का है साइंस घमंड। तुम सर्वशक्तिवान बाप से राजाई लेते हो। भारत के तुम मालिक बनते हो। यह हमेशा बुद्धि में रखो, विश्व का रचता हमको विश्व का मालिक बनाने आकर पढ़ाते हैं। एक सेकेण्ड में जीवनमुक्ति देते हैं तो एक सेकेण्ड में बाप इसमें प्रवेश नहीं कर सकेंगे! एक सेकेण्ड में आत्मा यहाँ से लंडन, अमेरिका में जाकर जन्म लेती है। आत्मा एकदम फ्लाइग इराकोड(रॉकेट) है। है कितना छोटा स्टार! पुनर्जन्म तो ज़रूर मानेंगे। तुमने कितने पुनर्जन्म लिए हैं? 84। अब तुम जानते हो, हम पूरे 84 जन्म लेते हैं। वर्णों में भी आना है– ब्राह्मण, देवता, क्षत्रिय... । अब तुम समझ गए हो, ब्रह्मा के गोद में आने से हम ब्राह्मण बने। गोद लेनी पड़ी न! जो बिल्कुल ही पतित, शूद्र बुद्धि हैं, वह आकर स्वच्छ बुद्धि बनते हैं। स्वच्छ बुद्धि का संग ऐसा ही बनावेगा। अभी तुम मास्टर ज्ञान सागर ठहरे। जो बाप में गुण हैं, वह तुम धारण करती हो। धोबी के बच्चे धोबी। तुम भी कहते हो– मनमनाभव, तो तुम्हारी आत्मा स्वच्छ हो जावेगी। बाकी दिव्य दृष्टि की चाबी उनके पास है। तुम मनुष्य से देवता बनती हो, इसलिए बच्चे को भी ताज दिखाते हैं, नहीं तो छोटे बच्चों को ताज नहीं होता, प्रिंसपना दिखाते हैं। माताएँ भी बाल–लीला का साक्षात्कार करती है– बरोबर हम जाकर महारानी बनेंगी। यह ज्ञान से भी समझ सकते हैं– अब हमारी आत्मा कोई काम की नहीं है। मैं लखपति हूँ, मैं गरीब हूँ, मैं वांढा हूँ, यह आत्मा बोलती है। वांढा हूँ, वस्त्र भी ऐसे चाहिए तो वांढे के वस्त्र हैं। अब शिवबाबा द्वारा हम देवता बन रहे हैं। पहले हम असुर थे। आत्मा ही असुर, पतित बनती है। मैं आत्मा पतित हूँ तो शरीर भी ऐसा पतित हैं। मेरे में अलाए (खाद) पड़ी है। ऐसे–2 अपन से विचार–सागर–मंथन करते रहना चाहिए, फिर हेर पड़ जावेगी। विचार–सागर–मंथन तुम बच्चों को करना है– राइट–रॉंग क्या है। अपन को आत्मा निश्चय करना है, मैं ब्राह्मण हूँ। इस शरीर द्वारा आत्मा को ही बुलाते हैं, शरीर को क्यों नहीं बुलाते हैं? आत्मा को खिलाते हैं। अच्छा, वह कैसे खावेंगे? ब्राह्मण के शरीर द्वारा खावेंगे। स्त्री समझती है, पति की आत्मा को बुलाया है। भला पति को खिलाती है, भाकी क्यों नहीं पहनती? गले क्यों नहीं लगाती? किसका स्त्री में प्यार होता है। जब उनकी आत्मा को बुलाते हैं तो समझते हैं, इनको क्या सौगात दे! तो ब्राह्मणी को हीरे का फूली दान करते हैं। बाबा अनुभवी है। समझते हैं, इनको आश थी हीरे की फूली की; इसलिए पहनाता हूँ। ब्राह्मण को बुलाते हैं। ब्राह्मणी में जैसे स्त्री का सोल है। है वास्तव में कुछ नहीं। यह एक रस्म–रिवाज़ है। फिर इनको अंगूठी व फूली पहना देते हैं। है तो आत्मा। शरीर तो नहीं आ सकता। समझते हैं, आत्मा आई हुई है। वास्तव में कोई आती भी नहीं है, यह एक ड्रामा में

खेल इस समय का, जो वह समझते हैं– आई हुई है, मैं उनको खिलाता हूँ। बड़े आदमी को धूमधाम से खिलाते हैं। यह रस्म–रिवाज़ है। वास्तव में ब्राह्मणों को नौकरी नहीं करनी है; परन्तु आजकल पेट के लिए सब कुछ करते हैं, नहीं तो ब्राह्मण लोग अपन को बहुत ऊँच समझते हैं; परन्तु वह है कुखवंशावली, तुम हो मुखवंशावली ब्राह्मण। तुम्हारी बहुत महिमा है। तुम अब समझ गए हो, वह ब्राह्मण हैं कुखवंशावली, हम हैं मुखवंशावली। हम सारी सृष्टि के आदि–मध्य–अंत की नॉलेज को समझ गए हैं। सिवाय एक के और कोई को नॉलेजफुल नहीं कहेंगे। जिनको मनुष्य से देवता बनाते हैं, इनको भी गोद ज़रूर चाहिए; क्योंकि यह है मात–पिता; परन्तु पालना कैसे करें? इसलिए निमित्त बनी हुई है जगदम्बा। वास्तव में जगदम्बा बनी यह (ब्रह्मा) है। मम्मा सरस्वती है बच्ची; परन्तु यह है मेल, इनको जगदम्बा तो कह न सके; इसलिए उनका नाम रखा है जगदम्बा। यह है मात–पिता। वह आकर तुमको इन द्वारा रचते हैं। तुम्हारी मम्मा को इसने एडॉप्ट किया तो माँ हो गई न। यह बातें और कोई की समझ में बड़ी मुश्किल आती हैं। कितनी वण्डरफुल बातें हैं! कहते हैं, दिन–प्रतिदिन गुह्य सुनाता है। जहाँ जी, नॉलेज धारण करनी है। पिछाड़ी में जाकर कर्मातीत अवस्था होगी, फिर कोई पाप का बोझा नहीं रहता। आठ पास विद ऑनर्स होते हैं। मिलेट्री लोग मरते हैं तो उनको फुल ऑनर्स देते हैं जब तक आयु पूरी हो। यह भी पुरुषार्थ कर रहे हैं, कर्मातीत बनने की रेस है– कौन पहले योग लगाते हैं और रुद्रमाला में जाते हैं। पहले तो गेरव(मुख्य) है मम्मा–बाबा, दो दाने। वह तो प्रसिद्ध हैं, बाकी फिर हैं नम्बरवार। पास विद ऑनर्स को फुल ऑनर्स मिलते हैं। वह ... आदि कुछ नहीं खाते। उनका मान बहुत है। हमेशा नवरत्न कहे जाते हैं, आठ नहीं। चार तो जोड़े हो जाते। बाकी है एक। बीच वाले को बीच में डालते हैं। वह लोग तो अर्थ को नहीं समझते, जिसने जो राय दी ऐसे बनाए देते हैं। जैनी लोग हठयोग कितना सिखाते हैं, बाल निकालते हैं। यह तो हिंसा हो गई। हिंसा का सन्यास दुख देने का सन्यास। तुमको तो कुछ भी करना नहीं पड़ता। तुमको तो टेम्पटेशन देकर, तुमसे विकारों का सन्यास कराते हैं। तुम जानते हो, बरोबर 63 जन्म मूत पिया है। यह नॉलेज भी तुम्हारे सिवाय और कोई में नहीं है। बरोबर 84 जन्म का चक्कर लगाया, अभी हम वापिस जाते हैं। जितना योग में रहेंगे तो तुम पवित्र बन सकेंगे। याद में रहते और सर्विस करते रहे तो उनको जास्ती फल मिलेगा। यह है बुद्धि की रेस ...। बरोबर बाबा मोस्ट बिलवेड है, जिससे 21 जन्मों का वर्सा मिलता है। वह मात–पिता तो विख का वर्सा देते हैं। देखो, विख पर भी गवर्मेन्ट ने केस किया; परन्तु खुद ही मूँझ जाते कि क्या करे। वह कहते हैं, पवित्र बन भारत को हम पवित्र बनाना चाहते हैं तो हम अपवित्र कैसे बनेंगे! अगर हम कहें– अपवित्र बनो, तो हमारे ऊपर दोष आ जाए। खुद ही मूँझ जाते हैं। कोई भी जज ऐसे नहीं कहेगा कि तुमको काम–कटारी ज़रूर चलानी है। ऐसी जजमेंट कोई दे न सके। विवेक अंदर खावेगा। कहेंगे– यह फिर कौन है! कहाँ से आई हैं? ऐसा केस चला था, फिर वहाँ ही बात को छोड़ दिया। जज क्या कहे! बाबा को कैलेक्टर आदि ने कहा– दादा, इनको कह दो कि विख देवे, नहीं तो बहुत हंगामा होगा, आपको मार डालेंगे, यह करेंगे; परन्तु बाबा कैसे कहेंगे। बाबा समझाते हैं, तुमको कोई मार ही नहीं सकता। कोई (घो)ड़े आदि को मारे तो भी केस हो जाए; परन्तु इन्हों का मोह रहता है बहुत पति में, बच्चों में। बाबा का भी बच्चों में मोह है न; परन्तु शुद्ध। शुद्ध मोह बाबा ही अब सिखाते हैं। बाकी सबका है अशुद्ध। अभी बाप कहते हैं, मुझ एक में मोह रखो तो मैं तुमको स्वर्ग का मालिक बनाऊँगा। बुद्धि में रहना चाहिए, हम पवित्र बन स्वर्ग के मालिक बनते हैं, एक जन्म विख न दे तो हर्जा थोड़े ही है! विख दिया तो वर्सा (गँवाए) देंगे। पुरुषार्थ से पता पड़ जाता है कौन पास होंगे। कई तो ईश्वर की संतान बन फिर भस्मासुर बन पड़ते। माया जोर से थप्पड़ मार देती है। इसलिए श्रीमत पर चलना चाहिए। माया वार कर लेती है तो फिर उस समय श...कत नहीं पड़ती है। सिवाय बाप के कोई मनुष्य को देवता बनाए न सके। भल गीता पढ़ते आए;

परन्तु उससे क्या हुआ? इनको (दादा को) भी बाबा कहते हैं, गीता आदि तो तुम बहुत पढ़ते आए हो, फिर उनसे क्या कल्याण हुआ? पहले तो इनसे पूछेंगे, जन्म–जन्मांतर पढ़ते आए हो, फिर भी पतित बन पड़े। यह है भक्तिमार्ग की सामग्री। पतित बनना ही है। पावन बनाने का नॉलेज है ही मेरे पास। अब तो है रावण राज्य। रावण का बुत भी बनाते आते। सतयुग में थोड़े ही बनावेंगे। यह बात भी आगे नहीं समझते थे। रावण को जलाते हो, फिर कहते थे, अब लंका को लूटो। एक झाड़ होता है, जिसमें बीमारी लगी रहती है पीले रंग की। वह समझते हैं, यह सोना है। सो निकाल पॉकेट में रखते हैं। अब वह कोई सोना थोड़े ही है। सचमुच रावण अभी मरता है और फिर तुमको सोने की राजाई मिलती है। उनको तो कुछ भी नहीं मिलता। तुम्हारे लिए सतयुग में सोना ही सोना होता है। वैकुण्ठ में तो सोना ढेर होता है। सोने की पुरी में तुम जाते हो। वहाँ सोने की ब्रिक्स(ईंटें) बनती हैं। बिगर ब्रिक्स थोड़े ही महल बनेंगे। वण्डर है न! यहाँ मिट्टी की ईंटें भी कितनी महँगी मिलती हैं, वहाँ तो सोने की ईंटों के महल बनेंगे। तुमको बड़ा नशा चढ़ना चाहिए– बापदादा के सन्मुख बैठे हो। बाप का बच्चे में मोह जास्ती होता है। इस बेहद के बाप का तो सब बच्चों में मोह होता है; क्योंकि डाडे से वर्सा मिलता है। सबको चोला स्त्री का हो व पुरुष का हो, वर्सा सबको मिलना है, जो जितना पुरुषार्थ करे। मनुष्य जास्ती में जास्ती 84 नाम लेते हैं। 84 जन्म तो 84 नाम होंगे। बाबा का एक ही नाम चला आता है; क्योंकि बाबा को तो शरीर है नहीं। इस ब्रह्मा का नाम बदल फिर नारायण नाम पड़ेगा, फिर शरीर बदलेगा तो नाम भी बदलेगा। मैं तो सबका कल्याणकारी शिव ही हूँ।

अब तुम बच्चों को भासना आती है कि हम मात–पिता पास सन्मुख बैठे हैं, उनसे डायरैक्ट सुन रहे हैं यह भासना है। अच्छा, सिकीलधे बच्चों को मात–पिता, बापदादा का यादप्यार, गुडमॉर्निंग। ॐ